कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

पूनम की उजली रातें हो
या मावस का श्यामल जाल।
रक्तिम-श्वेत-हरित रंगो से
आलोकित भारत का भाल।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 27, अंक 3

जुलाई-सितम्बर 2016 (विक्रम संवत् 2073)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,

गुलमोहर पार्क के पास

हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- पूर्वोत्तर .....आस्था का प्रश्न 3
- गौ संवर्धन यात्रा 4
- पौधारोपण जरुरी 5
- कुंद होती संवेदनाएँ 5
- सतत गतिमान स्वावलम्बन योजना 6
- एकल के प्रयास से पूरा गाँव साक्षर हुआ...!! 6
- भाग्यनगर में सम्पन्न हुआ ... 7
- संक्षिप्त संवाद 8
- लेकटॉउन महिला समिति द्वारा राखी मेला... 9
- धूमधाम से मनाया गया सिंधारा उत्सव 9
- अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ... 10
- नैपुण्य शिविर 11
- स्वाधीनता दिवस पर गीत प्रतियोगिता... 12
- अमृत वचन 12
- पश्चाताप 13
- अनुकरणीय 14
- शोक संवाद 15
- वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा बाढ़... 15
- बोधकथा... आत्मीय अनुभूति 16
- कविता ... उन्हें प्रणाम आज है 16

संपादकीय...

हम सब राष्ट्र निर्माण हेतु उत्कृष्ट योगदान दें

विश्व पटल पर भारत की भविष्य के महाशक्ति की छवि है और अमेरिका सहित दुनिया के प्रमुख देश भारत के प्रति अनुकूल रवैया रखते हैं। भारत की आधी आबादी नौजवानों की है और यही हमारा सबसे बड़ा भंडार है। बूढ़ी होती दुनिया में यह वास्तव में एक अनमोल देन है। भारत दुनिया की तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं वाला देश है। न्युवर्ल्ड वेल्थ की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया के सर्वोच्च 10 धनी देशों में 7 वें स्थान पर है। पिछले डेढ़ दो दशक के दौरान अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने एक के बाद एक कई बड़ी कामयाबियाँ हासिल की हैं। इसमें अब एक और अहम कड़ी जुड़ गई है। रविवार को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से अत्याधुनिक स्क्रैमजेट रॉकेट इंजन के पहले प्रायोगिक, मगर सफल परीक्षण के साथ ही भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान के वैश्विक परिदृश्य में अपनी एक खास जगह बनाई है।

यह सही है कि भौतिक समृद्धि और वैज्ञानिक उन्नति के बल पर मानव समाज ने विकास के नए-नए सोपानों का स्पर्श किया है परन्तु, यह भी सच है कि इस तथाकथित प्रगति ने मनुष्य को विनाशकारी सुरंग में धकेल दिया है। न केवल मनुष्य और मनुष्यता की बल्कि समग्र जड़-चेतन की बलि हो रही है इस विकास देवी की वेदी पर। इस विकास ने इन्द्रिय सुख देने वाली आत्म केंद्रित अहम् वृत्ति को विकसित किया है। परिणामत: हम अवसाद ग्रस्त और अशांत होते जा रहे है। निजीकरण, उदारीकरण और भूमंडलीकरण के इस दौर में पूंजी का वर्चस्व सर्वत्र व्याप्त होता जा रहा है। देश की कुल आबादी का करीब बाईस प्रतिशत हिस्सा सरकारी गरीबी रेखा से नीचे नारकीय जीवन जीने को विवश है। यह कैसा लोक कल्याणकारी राष्ट्र है, जहां अमीरों के ग्राफ का लंबवत उत्थान और गरीबी का समतलीय विस्तार होता जा रहा हैं। दस प्रतिशत लोगों के पास इतना धन है कि खर्च करने के लिए उन्हें योजना बनानी पड़ती है और दूसरी तरफ नब्बे फीसदी जनता दिन-रात मेहनत करने के बावजूद भौतिक दृष्टि से बहुआयामी समस्याओं से जूझ रही है। कई परिवारों की आय 6 अंकों में है, दूसरी ओर कई परिवारों की आय का जरिया ही नहीं है। क्यों मूलभूत जनसुविधाएँ व सामाजिक सेवाएं समान रुप से सभी नागरिकों को नहीं मिलती। एमए, बीए पास युवक चपरासी की नौकरी करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। हमारे देश में दो तरह की शिक्षा व्यवस्थाएँ लागू हैं। एक, अमीरों के लिए और दूसरी लाचार और गरीब लोगों के लिए। अनपढ़ मंत्री बन जाता है और पीएचडी किए हुए युवक चपरासी बनने के लिए तरसते हैं। यह है हमारे देश की वास्तविक स्थिति। यह सूरत कब बदलेगी? विकास की अंधी दौड़ से मोहाविष्ट होकर मनुष्य जल-जंगल जमीन को नष्ट करता जा रहा है।

जंगल एवं जंगल से जुड़े उत्पादों पर से वनवासियों के अधिकार छीन लिए गये जिसके परिणाम स्वरुप जनजातीय विकास में बाधा उपस्थित हुई और वे कंगाल हो गये। इस तरह से उनकी सामुदायिक समझ को नष्ट कर दिया गया और उन्हें दिहाड़ी मजदूर, पियक्कड़ एवं बेरोजगारों में तब्दील कर दिया गया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि पंक्ति के आखिरी व्यक्ति को यह अहसास होना चाहिए, उसे गर्व होना चाहिए कि यह देश उसका है और देश के विकास में उसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कल्याण आश्रम सामाजिक उद्यमिता को बढ़ावा देने एवं वनवासी समाज को सशक्त करने हेतु पिछले 64 वर्षों से कार्यरत है। हमारा प्रयास है कि लोगों में मानवीय मूल्यों व संवेदनशीलता को जगाया जाए। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब अपनी-अपनी भूमिकाओं को पहचानते हुए वनवासी के सर्वांगीण विकास हेतु अपना उत्कृष्ट योगदान देने के लिए संकल्पित हों। इति शुभम्

- स्नेहलता बैद

पूर्वोत्तर .....आस्था का प्रश्न

(एल. खिमुन के आलेख पर आधारित)

अनुवाद : सुरेश चौधरी

पूर्वोत्तर के सभी प्रदेश अध्यात्म, दर्शन, धर्म, इतिहास एवं संस्कृति में सनातन धर्म से एकत्व रखते हैं। पूर्वोत्तर के सभी वनवासी प्रकृति को पूजने में विश्वास रखते हैं क्योंकि वे सोचते हैं की प्रकृति एवं प्रकृति की रचना स्व-विक्षुण, व्यापक, विशद, अभिव्यक्ति विभिन्न आकारों में है। अरुणांचल के नागा इस निराकार सर्वव्यापी वस्तु को रंगफ्रा, रंग-जब्बन या टिंगकाओ-वा के नाम से पुकारते हैं, नागालैंड, मणिपुर, असम के नागा से टिंगकाओ-रकवंग या तिंग-वांग से बुलाते हैं। अरुणांचल के तानिस इसे दोनी-पोलो, मिश्मी अमिक-मताई या रिनय-जाव्मालूया शिबरी, असम के वनवासी बथोऊ के नाम से पुकारते हैं। इन सब शब्दों का हिंदी में अर्थ ईश्वर के समतुल्य है। इसके दो पहलू हुए- एक तो उद्देश्यपरक दूसरा व्यक्तिपरक। उद्देश्य परक पहलू और कुछ नहीं बल्कि ईश्वर की अप्रत्यक्ष आत्म-ज्योत शक्ति जो कि प्रकृति को नियमित एवं संयमित करती है जिसे रंग, टिंगकाओ, अमिक, रिन्य एवं दूसरी ओर जो चेतना और विचारों में भावनाओं, शांति, पूर्णता, न्याय, धर्म की तरह अपने संबंधित रूप में विद्यमान है जो मूल रूप से निराकार भगवान के व्यक्तिपरक पहलू हैं। मानव रूप में जब उसे देखते हैं तब उसे रंगफ्रा, मताई, जब्बन, जव्मालू, इत्यादि शब्दों से पुकारते हैं जो कि हिंदी में भगवन के समकक्ष है।

पूर्वोत्तर के वनवासी सार्वभौमिक सिद्धांत को मानते हैं जिसमें ईश्वर को सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञ माना गया है। पूर्वोत्तर की जनजाति एवं हिन्दू भी अभिव्यक्ति को मानते हैं न कि सृजन को, क्यूंकि सृजन मूल सार्वभौमिक सिद्धांत से अलग है। सृजन से यह भान होता है कि कोई सर्जक है जिसने सृष्टि बनाई, यह दो प्रकार की आस्था द्वैत कहलाती है।

द्वै त यह मानते हैं कि सृजन एवं सृष्टि दो अलग वस्तु हैं एवं उनका पृथक अस्तित्व है। अगर ऐसा माने तो सर्जक निश्चय ही सृजन में अनुपस्थित है। अगर ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है तो यह सर्वशक्तिमान भी नहीं हो सकता और सर्वशक्तिमान नही है तो सर्वज्ञ भी नहीं हो सकता। अत: यह उचित नही होगा की ईश्वर की मान्यता को नकार दें एवं सार्वभौम सिद्धांत पर प्रश्नचिन्ह लगा दें।

अधिकतम पश्चिमी धर्म यहूदी, इसाई, इस्लाम द्वेत सिद्धांत मानते हैं एवं सृष्टि में विश्वास करते हैं। अत: उनके धर्म में असंख्य भ्रांतियाँ हैं, जैसे कि शैतान में विश्वास होना यह सर्वव्यापी के विरुद्ध है, क्योंकि शैतान में ईश्वर कैसे हो सकता है। अगर उसमे ईश्वर है तो वह शैतान कैसे होगा। पूर्वोत्तर की जनजाति एवं हिन्दू अद्वेत सिद्धांत को मानते हैं ताकि कोई भ्रम न रहे। वेदांत एवं अभिव्यक्ति में विश्वास होने से कोई भ्रम नहीं रहता क्योंकि अगर ईश्वर मैं की अभिव्यक्ति है तो ईश्वर हर जगह है, जैसे की बर्फ में हर जगह जल है। इसीलिए ये पूर्वोत्तर की जनजातियां एवं हिन्दू भूत, शैतान आदि में विश्वास नहीं करते। चूँकि पूर्वोत्तर की जनजातियां एवं हिन्दू एक ही मत को मानते हैं, तो इन्हें हिन्दू ही कहा जाना चाहिए जो सनातन धर्मावलम्बी हैं।

पूर्वोत्तर के भारत की सभ्यता से कोई भी संपर्क निकलने से पहले जान लें कि सभ्यता क्या है? अगर आधुनिकता, विज्ञान एवं भौतिक विकास ही सभ्यता है तो यह मान लेना चाहिए कि पूर्वोत्तर में कोई सभ्यता नही है। अगर यह मानवीय विचार में प्रगति है या मानवीय सत्यता है तो ये जनजातियां संसार की किसी भी जाति से कम सभ्य नहीं है। विगत में पूर्वोत्तर के लोग उच्च गौरव एवं सम्मान के साथ रहते थे। वे बहुत बहादुर, कोमल, भोले, ईमानदार, सरल होते थे। वे धर्मभीरु होते थे। विगत में ये लोग दरवाजे पर कोई ताला तक नही लगाते थे क्योंकि चोरी जैसा शब्द उनके शब्दकोश में नही था। परन्तु आजकल वे भी बाहरी सभ्यता के संग से बदल रहे हैं। पूर्व की संस्कृति को पुनर्जीवित करने

हेतु कई संस्थाएँ जैसे कि रंगफ्रा फैथ प्रमोशन सोसाइटी, दोनी पोलो एलम केबंग, ज़ेलियांग राँग हेरक्का, सेंग खासी इत्यादि बनाई गयी हैं।

मुख्य भूमि के हिन्दू की भांति ये लोग भी मानते हैं कि ईश्वर एक ही है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में अलग-अलग नाम से पूजा जाता है, अत: हम सब उस परम पिता की संतान हैं, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता से परे। संस्कृत में सदियों पहले कहा भी गया है ''वसुधैव कुटुम्बकम''। अत: हम सभी धर्मों का सम्मान करते हैं, हम एकता में, विविधता में विश्वास करते हैं, पश्चिम की भांति नहीं कि अपना अस्तित्व या सर्वश्रेष्ठ का आस्तित्व ही रहना चाहिए। हम सब के आस्तित्व में विश्वास करते हैं। सर्वश्रेष्ठ का अस्तित्व मानव समाज में संभव नहीं, बल्कि दीन एवं दलित की खातिर जीना ही सच्चा धर्म है। जो प्रजाति इस सिद्धांत को मानती है वह विश्व में सबसे ज्यादा निकृष्ट है, अत: विचारों की उच्चता को सभ्यता का मापदंड मानें तो हम सबसे ज्यादा सभ्य हैं।

इतिहास को देखें तो महाभारत काल से ही यह क्षेत्र भारत का अभिन्न अंग रहा है। मालिनीथान इसका साक्ष्य है। अरुणांचल के लिखाबली क्षेत्र में पार्वती ने कृष्ण का स्वागत किया था जब कृष्ण रुक्मिणी को हर कर लाये थे इसीलिए इस क्षेत्र का नाम मालिनी (पार्वती) स्थान पड़ा।

इसी प्रकार ब्रह्मकुंड या परशुराम कुंड दूसरा साक्ष्य है। भारतीय पौराणिक कथानुसार परशुराम विष्णु के छटें अवतार हैं। वे जमदग्नि एवं रेणुका के पुत्र हैं। परशुराम अमर हैं। इन्होनें त्रेता में जन्म लिया पर द्वापर के महाभारत युद्ध को भी दखा। भगवन शिव की हजारों वर्ष तपस्या कर उन्होंने शिव से फरसा प्राप्त किया। एक बार परशुराम के पिता ने अपनी पत्नी को अनाचार के कारण मारने को कहा तो उन्होंने फरसे से उसका सर अलग कर दिया। तेजू, अरुणांचल के नजदीक कुंड में अपने पाप को धोया अत: इस कुंड का नाम परशुराम कुंड या ब्रह्मकुंड पड़ा।

अत: हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि पूर्वोत्तर के लोग एवं यह क्षेत्र देश से अलग नहीं बल्कि सदियों से देश का अभिन्न अंग है। ■

गौ संवर्धन यात्रा

पिछले अगस्त महीने में ओडिशा के गजपति और गंजाम जिले के 134 गांवों में गौ संवर्धन यात्रा निकाली गई। सभी स्थानो पर गौ पूजन के बाद संतो द्वारा प्रवचन होता था। गोमाता हमारी संस्कृति की पहचान है। अमृत प्रदायिनी गोमाता की रक्षा करने के लिये राजा दिलीप ने अपने प्राणों की बाजी लगाई थी। अत: गाय बचेगी तो हमारी संस्कृति बचेगी। हृदयस्पर्शी प्रवचनों के बाद गो संरक्षण की आवश्यकता, गो पालन के सामाजिक और आर्थिक पक्ष के बारे में कई वक्ताओं ने संबोधित करके जनचेतना जगाई। सभा के अंतिम चरण में गोमाता की आरती होती थी। कल्याण आश्रम के सक्रिय सहयोग से होने वाली इस यात्रा में पूज्य संत लक्ष्मी बाबा, श्री डमरु धर मंडल, श्री तरणी सेन दास, श्री सुरेन्द्र मादला अदि कई कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

कुछ सालों से कल्याण आश्रम गो रक्षण, गो संवर्धन और गो आधारित कृषि विकास को जनजाति समाज के आर्थिक विकास की दृष्टि से देख रहा है। समय-समय पर प्राणी चिकित्सक के सहयोग से गो स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन, जैविक खाद प्रस्तुति, सही देखभाल, दुग्ध उत्पादन आदि विषयों पर कार्यशाला का आयोजन भी हुआ है। गो पालकों का सार्वजनिक मंच पर समय समय पर सम्मान भी किया जाता है। इन सब से समाज में अपने आप एक सकारात्मक बदलाव आने लगा है। कल्याण आश्रम द्वारा देशी नस्ल की गाय 92 परिवारों को दी गई है।

गंजाम जिला के हिंजलीकाटु में लगने वाली साप्ताहिक हाट में कृषि उत्पादन कारोबारों के साथ बहुत बड़ा गाय का बाजार लगता था। किसान अपनी बूढ़ी गायों को कसाई के हवाले कर देते थे। हरेक बार लगभग 500 से ज्यादा गो वंश कत्लखाना भेज दिया जाता था। जन जागरण, विरोध और प्रशंसनीय सक्रियता के कारण आज वह दृश्य नहीं दिखाई देता है। ■

पौधारोपण जरुरी

- ज्योति गुप्ता, काकुड़गाछी समिति

पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए जरूरी है पौधारोपण। इसके बिना हम ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न खतरे का सामना नहीं कर सकते। प्राकृतिक सौन्दर्य बनाए रखने में पेड़ पौधों की अहम भूमिका है। इसके प्रति लोगों में जागरुकता फैलाने की आवश्यकता है। इसी प्रेरणा से कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ता अपने आत्मीय बन्धुओं के साथ 3 जुलाई 2016 को वृक्षारोपण हेतु बेल-पहाड़ी गये। कुल 49 कार्यकर्ता थे।

जब हम हावड़ा जा रहे थे तो बारिश का मौसम था, फिर जब ट्रेन में थे तो बारिश तेज हो रही थी। मन में बहुत डर लग रहा था कि पेड़ लगाने जा रहे हैं पर ऐसी बारिश में? झाड़ग्राम में ट्रेन से उतरे तब भी रिमझिम-रिमझिम बारिश आ ही रही थी। अब हम बस से बेलपहाड़ी छात्रावास की ओर जा रहे थे और भगवान से यही प्रार्थना कर रहे थे कि जिस मकसद से जा रहे हैं वो पूरा हो जाये और ये क्या जब हम वहाँ पहुँचे तो बारिश का नामोनिशान तक नहीं था। कहते हैं न जहाँ चाह वहाँ राह। सबमें बड़ा जोश और उत्साह था। तीन लोग वन-विभाग से भी आये थे जिन्होंने पेड़ लगाने में हमारी बहुत मदद की। बच्चों का उत्साह तो देखते ही बनता था। एक हजार पेड़ लगाने का लक्ष्य था जो लगभग पूरा हुआ। पर ये क्या ! जब हम वापस बस के लिए जा रहे थे तो सबके हाथ में छतरी खुली हुई थी।

मैंने पूजा (युवा समिति) से पूछा कि कैसा लग रहा है? उसने बताया पहले भी कल्याण आश्रम की तरफ से वनवासी गाँवों में गयी है, आगे भी जब भी मौका मिलेगा जाती रहूंगी। कल्याण आश्रम के साथ जाने से आनन्द आता है और दिल को जो सुकून मिलता है वो कहीं और या ज्यादा पैसा खर्च करने से भी नहीं मिलता।

बेलपहाड़ी छात्रावास बहुत पुराना है जहाँ इस वक्त 29 लड़के रह रहे हैं । उनसे पूछने पर बताया कि बड़े होकर कोई शिक्षक, डॉक्टर, इंस्पेक्टर, पॉयलट, इंजीनियर बनना या कोई आर्मी में भी जाना चाहता है। उनके भविष्य की मंगलकामना करते हुए हम सब लौट आये। ■

कुंद होती संवेदनाएँ

ओडिशा के कालाहांडी इलाके में एक आदिवासी दाना अपनी पत्नी की लाश को कंधे पर लाद कर बारह किलोमीटर सड़क पर चलता रहा और लोग किनारे खड़े तमाशा देखते रहे, फोटो खींचते रहे, टीवी मीडिया वाले उसका वीडियो बनाते रहे। कोई मदद के लिए आगे नहीं आया। टीबी जैसी ठीक हो जाने वाली बीमारी से मर जाने के बाद पत्नी की लाश को घर ले जाने के लिए उसे अस्पताल से एंबुलेंस तक मुहैया नहीं कराई गई थी। जब खबर फैलने लगी, तब इज्जत जाने के डर से प्रशासन को होश आया। यह घटना मानवीय संवेदनाओं और हमारे सभ्य कहे जाने वाले समाज को शर्मसार करने के लिए काफी है। हमारी संवेदनाएं निर्ममता के चरम स्तर तक कुंद हो चली हैं। हमारा समाज इतना भयावह बन चुका है कि हमें अपने सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता। यह हमारे आत्मकेंद्रित स्वार्थ की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या हैं जो मानवीय मूल्यों को लगातार विस्मृत करते जा रहे हैं। हमें केवल अपना दु:ख उद्वेलित करता है किन्तु पराया दु:ख जरा भी उद्वेलित नहीं करता।

हमें इस संवेदनहीनता से व्यापक स्तर पर ही लड़ना होगा। सिर्फ शोरगुल मचाने से हासिल कुछ नहीं होना ! ■

सतत गतिमान स्वावलम्बन योजना

- विद्या खेमका, लेकटाउन समिति

विगत 3 सालों से स्वावलम्बन योजना के अन्तर्गत गाँव से वनवासी लड़कियों और महिलाओं को बुलाया जाता है कल्याण-भवन में। 300-350 महिलाओं ने इस योजना का लाभ उठाया है। एक या दो महीने के अंतराल से ये महिलायें आती हैं। 15-16 दिनों में उन्हें मोती का काम व सिलाई सिखाई जाती है।

गत् 13 जुलाई को 11 लड़कियाँ आई जिनमें 7 पुरानी व 4 नई थी। पुरानी एडवान्स कोर्स करने आई थी। मैने पश्चिम मेदिनीपुर से आई राधा हैम्ब्रम से पूछा कि 3 माह पहले और आज में क्या परिवर्तन आया है उनके जीवन में? उसने बताया पहले जिंदगी का कोई मकसद नहीं था और न ही कोई कमाने का जरिया। लेकिन अब मैने मशीन ले ली है जिससे गाँव में ही उसे काम मिल जाता है। जब एडवान्स कोर्स करके जाऊंगी तो और ज्यादा काम कर पाऊँगी।

नदिया से माम्पी सरकार आयी है। पूछने से उसने बताया 1 महीने पहले वो आयी थी, दुबारा आने से उसका आत्मविश्वास और बढ़ गया है। गाँव में सिलाई का काम मिलने लगा जिससे घर में आर्थिक मदद भी हो जाती है। गाँव की अन्य लड़कियों को भी इससे मदद मिल रही है। नदिया से ही वनफूल सरकार आयी थी। पूछने पर उसने बताया कि 1 महीने पहले वो यहाँ आई थी। कारखाने के मालिक ने उस पर विश्वास दिखाया और कारखाने में उसे काम दे दिया जहाँ जाने में उसे साइकिल से 15 मिनट लगते हैं और अब जब एडवान्स कोर्स करके जाऊंगी तो मेरी जीवन धारा ही बदल जायेगी।

उनका आत्मविश्वास देख मुझे लगा गाँव व शहर के बीच की दूरियाँ मिट रही हैं। "तू-मैं एक रक्त" की धारा का सही अर्थ में बहाव हो रहा है। इस संगठन से जुड़ कर हमें लगता है कि उनके लिए नहीं बल्कि अपने मन की शान्ति व सुख के लिए हम ये सब कर पा रहे हैं। ■

एकल के प्रयास से पूरा गाँव साक्षर हुआ...!!

- सुषमा कर्मकार, एकल विद्यालय की समर्पित आचार्या

पश्चिम बंगाल के मालदा जिला के हबीबपुर ब्लॉक, आकलौल पंचायत भदुपाड़ा गांव में 2001 से एकल विद्यालय शुरू हुआ था। उस समय इस गांव में खोजने से एक या दो व्यक्ति ही शिक्षित मिलते थे जिनकी शिक्षा तीसरी एवं चौथी कक्षा तक ही थी। और आबादी 272 के आसपास।

एकल के निरंतर प्रयास ने 13 साल में इस पूरे गांव को साक्षर बनाया। वर्तमान में 6-14 साल तक का एक भी बच्चा निरक्षर नहीं है। ग्राम समिति ने बच्चों की शिक्षा देखकर 2005 साल में एकल विद्यालय के लिए टीने का एक गृह निर्माण कराया। 6-7 बार मालदा-कोलकाता की वनयात्रा भी हुई थी।

वर्तमान में 40 अनिवार्य छात्र हैं। इन 13 सालों में 56 छात्र पास हुए हैं। पास हुए विद्यार्थी बी.ए. में- चन्द्रमोहन सरकार, ललिता सरकार, श्यामलाल मुर्मू, विश्वजीत बर्मन। हाई स्कूल में - प्रिया कर्मकार, पिंकी राय, संजीव कुमार, सन्तोष बर्मन, सुकीर्ति अधिकारी, रूबी बर्मन, नन्दिता राय उनमें से मैट्रिक में 25, हायर सेकेण्डरी में 7 तथा बी.ए. में 4 छात्र पढ़ रहे हैं।

ग्रामवासी बहुत खुश हैं। हमें सब सम्मान देते हैं। गांववासी तो अब ऐसा कहते हैं कि - **एकल अगर न होता तो हमलोग आँख रहते हुए भी अन्धे बनकर रह जाते। अब प्रत्येक परिवार में सभी आँख वाले हो गये हैं।** ■

भाग्यनगर में सम्पन्न हुआ प्रचार-प्रसार आयाम का अखिल भारतीय प्रशिक्षण वर्ग

वनवासी कल्याण आश्रम के प्रचार-प्रसार आयाम का अखिल भारतीय प्रशिक्षण वर्ग 11, 12 जून 2016 को भाग्यनगर (हैदराबाद) में सम्पन्न हुआ। इस वर्ग में आए 14 प्रान्त के 29 प्रतिभागियों को मार्गदर्शन करने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मिलिंद ओक एवं वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री अतुल जोग पधारे थे।

विभिन्न प्रान्तों के प्रचार-प्रसार प्रमुख, पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से जुड़े कार्यकर्ता, वनबन्धु पत्रिका के प्रान्त प्रतिनिधि एवं प्रचार-प्रसार के कार्य में कार्यरत कुछ कार्यकर्ताओं ने विविध चर्चा सत्रों में अपनी सहभागिता जताई।

नासिक से आए एकनाथ सातपुरकर-आरुषा क्रिएशन्स् ने (इलेक्ट्रोनिक मीडिया का महत्व) इस विषय को प्रस्तुत करते हुए कहा कि एक सी डी क्रिएशन भले ही खर्च के रुप में हमें बड़ा खर्च लगता होगा, परन्तु वह कार्य के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है।

कर्णावती (अहमदाबाद) से पधारे किशोर मकवाणा ने प्रिन्ट मीडिया का महत्व इसके बारे में जानकारी दी। भाग्यनगर के ही आयुष जी ने पावर पॉईन्ट प्रेजन्टेशन के माध्यम से अपना विषय रखा और युवा कार्यकर्ता चैतन्य ने सभी को पावार पॉईन्ट प्रेजन्टेशन का प्रशिक्षण दिया।

अनुकूल वातावरण का कैसा असर रहता है, इसका भी एक उदाहरण देखने को मिला। 76 वर्ष के अपने कार्यकर्ता विश्वकर्मा (कानपुर) जी ने कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिये अपनी इच्छा जताई और सबको आश्चर्यचकित कर दिया। कार्य के प्रति यदि लगन है तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं है का उदाहरण प्रस्तुत किया।

वनबन्धु मासिक पत्रिका के जून 2015 से 2016 तक के सभी अंकों को प्रशिक्षण स्थल पर प्रस्तुत कर कार्यकर्ताओं को अपनी पसंद बताने को कहा गया। इसके कारण हमारे प्रान्त में प्रकाशित पत्रिकाओं का मुखपृष्ठ अच्छा कैसे हो, इस प्रकार का विचार शुरु हुआ।

कल्याण आश्रम द्वारा प्रकाशित हो रही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए सामग्री एकत्रित करना, उसकी साज-सज्जा के सन्दर्भ में डॉ राधिका लढ़ढ़ा (उदयपुर) एक सत्र में मार्गदर्शन किया। सभी से सुझाव मांगे गए।

एक सत्र में सभी कार्यकर्ता का परिचय प्राप्त करने अपने अखिल भारतीय संगठन संत्री सोमयाजुलु भी पधारे थे। उन्होंने वेब साईट को क्रियान्वित करना आवश्यक है और उसको समय-समय पर अपडेट भी रखना होगा, इस विचार को व्यक्त कर भविष्य के लिए मार्गदर्शन किया।

कार्यकर्ताओं ने अंतिम सत्र में अपने-अपने विचार व्यक्त किये-जैसे ऐसा वर्ग प्रतिवर्ष होना चाहिए, इसमें प्रेस नोट लिखने का प्रशिक्षण भी होना चाहिए, प्रान्त में भी इस प्रकार के प्रशिक्षण का प्रयास करना चाहिए इत्यादि।

श्रीराम विद्यार्थी निलयम, सिकंदराबाद के युवा कार्यकर्ता और आन्जनेअलु सहित सभी ने बहुत अच्छी व्यवस्था कर सभी से अभिनंदन प्राप्त किया। ■

संक्षिप्त संवाद

काकुड़गाछी महिला समिति द्वारा विष्णुसहस्त्रनाम (तुलसी अर्चना) पाठ

4 अगस्त-2016 को काकुड़गाछी महिला समिति की ओर से कल्याण भवन में विष्णुसहस्त्रनाम(तुलसी अर्चना) पाठ संपन्न हुआ जिसमे 45 महिलाओं ने भाग लिया।15 कार्यकर्त्ता थे व 30 महिलाएं मेहमान थी। प्रत्येक महिला को दीपक और बाती दी गई थी। वे अपने स्थान से ही आरती कर रही थी। वह दृश्य बड़ा ही मनोरम हो गया था। एक महिला ने कहा उनकी बहुत सालों से इच्छा थी कि बद्रीनाथ जाकर विष्णुजी को तुलसी चढ़ाऊँ परन्तु वहां तो नहीं जा पाई। यहाँ तुलसी अर्चना कर मन को बहुत शांति मिली।

तमिलनाडू में महिला समिति की बैठक

बैठक संगठन का महत्वपूर्ण पहलू है। तमिलनाडू में प्रान्त महिला समिति की दो दिवसीय बैठक 30-31 जुलाई को अरणोतिमलाई ग्राम में सम्पन्न हुई। इस बैठक हेतु ग्रामवासियों ने पूरा सहयोग दिया। बैठक में उपस्थित 12 बहनों ने गांव के सभी घरों में सम्पर्क किया एवं आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड एवं जाति प्रमाण पत्र की पूछताछ की एवं उसका महत्व बताया। साथ ही उसे प्राप्त करने का तरीका भी बताया। इस प्रयोग से महिला कार्यकर्ता को सामाजिक दृष्टि मिली।

युवती चेतना शिबिर

15 से 17 मई को कर्नाटक प्रान्त का युवती चेतना शिविर मैसूर में सम्पन्न हुआ। शिविर में स्वास्थ्य, आधुनिक तंत्रज्ञान एवं शिक्षा का महत्व, संगठन की आवश्यकता तथा लव जेहाद जैसे ज्वलंत विषयों पर भी चर्चा की गई। शिविर में 6 जिलों से 35 युवतियाँ सहभागी हुई।

कर्नाटक में महिला सम्मेलन

28 अगस्त को कर्नाटक के कारवार जिले के कुमठा में महिला सम्मेलन आयोजित किया गया था। सम्मेलन में 150 महिलाएं उपस्थित थी। सम्मेलन में वनवासी महिलाओं की स्थिति, सामाजिक कार्य में महिलाओं का योगदान एवं कल्याण आश्रम का महिला कार्य, इन विषयों पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम में श्रीमती माधवी जोशी एवं श्रीमती कौशल्या दीदी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

राणी सती दादी का मंगल

गत 31 अगस्त बुधवार को भाद्रपद की अमावस्या के उपलक्ष में हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं ने राणी सती दादी का मंगल पाठ करवाया जिसमें भक्तों की संख्या 90 थी। सबने बड़े उत्साह और भक्ति पूर्वक पाठ किया तथा अगले वर्ष पुन: विराट स्तर पर इस आयोजन को करने का मानस बनाया। ■

आगामी कार्यक्रम

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की कोलकाता-हावड़ा महानगर इकाई का 37वां वार्षिकोत्सव स्थानीय कलामंदिर में आगामी 18 दिसम्बर 2016 को आयोजित किया जायेगा।

लेकटॉउन महिला समिति द्वारा राखी मेला का भव्य आयोजन

पूर्वांचल कल्याण आश्रम लेकटॉउन महिला समिति ने त्रिदिवसीय (16-18 जुलाई) तक राखी मेला का आयोजन स्थानीय गोकुल बैंक्वेट में किया। पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा सुन्दरबन के गोसाबा द्वीप में 100 वनवासी कन्याओं के लिए छात्रावास का निर्माण हो रहा है। यह प्रदर्शनी उसी निर्माण कार्य हेतु समर्पित है। प्रदर्शनी का शुभ आरंभ ईश वंदना से किया गया। मुख्य अतिथि चिंतक लेखक और एफ. सी. ए प्रमोद शाह ने दीप प्रज्ज्वलित कर राखी मेले का औपचारिक उद्घाटन किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कल्याण आश्रम के कार्याकर्ताओं की सराहना की और कहा कि राखी मेला के माध्यम से महिलाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। इस कार्यक्रम में महानगर के कई पदाधिकारी भी शामिल हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने में किरण मंत्री, मृदुला भूतड़ा, सरिता सांगानेरिया, विद्या खेमका,अर्पिता अग्रवाल आदि कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा है। ■

धूमधाम से मनाया गया सिंधारा उत्सव

- कुसुम सरावगी, सुनीता मूंधड़ा

कोलकाता महानगर की महिला समितियों का सिंधारा उत्सव गत 3 अगस्त को साल्टलेक स्थित मेवाड़ बैन्क्वेट हॉल में मनाया गया जिसमें लगभग 250 महिलाएँ उपस्थित थी। रंग बिरंगी परिधानों में सजी महिलाओं ने सिंधारा उत्सव का जम कर लुत्फ उठाया। तरह-तरह के खेल, नृत्य, गीत एवं अभिनय ने महिलाओं के उत्साह को दुगुना कर दिया। इस बार सिंधारा उत्सव की थीम, परिकल्पना एवं व्यवस्था का दायित्व सिल्वर स्प्रिग एवं राम मंदिर महिला समिति पर था। दोनों समिति की सभी कार्यकर्ता बहनें इस कार्यक्रम में उल्लासित होकर सक्रिय हुई। कार्यक्रम के पश्चात् सुरुचिपूर्ण स्वादिष्ट भोजन का आनंद भी सबने लिया।

हावड़ा महानगर में महिला समिति द्वारा सिंधारा उत्सव काफी धूमधाम से मनाया गया। चार राज्यों - राजस्थान, बंगाल, बिहार और पंजाब की संस्कृति को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम की रचना की गई। इन राज्यों के अनुरुप महिलाओं द्वारा पहने गये परिधान पर हमने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें हर राज्य से एक विजेता का चुनाव किया गया। राज्यों के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के अनुरुप ही हमने नाटक, नृत्य, सुस्वादु व्यजन, खेल और अन्त्याक्षरी का भी आनंद उठाया। लगभग 140 महिलायें इस आयोजन में उपस्थित रहीं। सभी ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ■

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम नगरीय कार्य बैठक सम्पन्न

दो दिवसीय अखिल भारतीय नगरीय आयाम बैठक का आयोजन दिनांक 2 जुलाई, 2016 को प्रशांति कुटीर, बैंगलुरु , कर्नाटक में किया गया। स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय के शांत और हारीतिमायुक्त परिसर में सम्पन्न दो दिवसीय बैठक में भारत के 25 प्रांतों के 136 संभागियों ने भाग लिया तथा कर्नाटक के 50 आईटी इंजीनियर (वनमित्र) प्रबंधन में लगे।

बैठक का उद्घाटन अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के सह राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री अतुल जोग की उपास्थिति में हुआ। उद्घाटन में मुख्य वक्ता अखिल भारतीय सह नगरीय कार्य प्रमुख श्री भगवान सहाय ने सर्वप्रथम 26 दिसम्बर, 1952 में श्री बालासाहब देशपाण्डे द्वारा वनवासी क्षेत्रों में कार्यारंभ के इतिहास को स्पष्ट करते हुए समाज में अनुबंधन, आत्मीयता, साझेदारी, उत्थान व सफल एकीकरण के मूल्यों पर जोर दिया। आपने ऋग्वेद से लेकर आज तक के वनवासियों के योगदान की चर्चा की। आपने सम्पूर्ण भारत में वनवासी कार्यों जिनमें 394 वनवासी जिलों के 13183 गांवों में संचलित 18,609 प्रकल्पों पर प्रभावी रुप से प्रकाश डाला। वनवासी कल्याण आश्रम के 460 शिक्षा प्रकल्पों द्वारा 1,25,415 विद्यार्थी, 43 बालिका छात्रावास सहित 219 छात्रावासों के माध्यम से 4428 वनवासी छात्र-छात्राओं को शिक्षा प्रदान की जा रही है।

कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख श्री शंकरलाल अग्रवाल ने संगठन एवं कार्यकर्ताओं के संबंध जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अपने विशिष्ट विचार रखे। प्रारंभिक सत्र में प्रांतीय गतिविधियों की प्रस्तुति दी। श्री भागचंदजी जैन (कोलकाता) एवं श्री संदीप चौधरी ने साधन संग्रह की पद्धति पर चर्चात्मक विषय लिया।

दिनांक 2 जुलाई, 2016 की संध्या समय स्नेह-मिलन का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें बैंगलुरु नगर के 100 मान्य अतिथियों ने भाग लिया। एक वनवासी विद्यार्थी द्वारा गीत से कार्यक्रम शुरु हुआ। कल्याण आश्रम के क्रियाकलापों से संबंधित वीडियो प्रदर्शन भी हुआ जिसमें वनवासी आश्रम द्वारा हमारे समाज में वनवासी के समाकलन का चित्रण था। पंचगव्य चिकित्सक श्री दामोदर शेट्टी द्वारा पंचगव्य की जानकारी का सत्र भी रखा गया। वनवासी बालिकाओं के संस्कृति तथा मूल्याधारित भरतनाट्यम व मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम से स्नेह-मिलन सम्पन्न हुआ तथा श्री अतुल जोग द्वारा सभा को संबोधित किया गया।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र का उद्घाटन स्वागत समिति के अध्यक्ष सेवानिवृत्त एवीएसएम वीएसएम एडमिरल के.नारायण द्वारा किया गया। आपने समाज में प्रभावी समरसता हेतु वनवासियों के घरों के दरवाजों तक शिक्षा पहुंचाने की आवश्यकत प्रतिपादित की एवं नि:स्वार्थ सेवा पर जोर दिया।

विभिन्न सत्रों में नगरीय युवा क्रियाकलापों, कल्याण आश्रम के कार्यों में महिलाओं की भागीदारी, प्रशिक्षण का महत्व आर्थिक सहयोग एवं सी. एस. आर.आदि विषयों पर चर्चा की गई। श्री किशनलाल बंसल ने विशेष सम्पर्क संबंधित गतिविधियों की जानकारी दी।

विश्वविद्यालय के डॉ.आर.नागरत्ना ने समापन समारोह में उपस्थित रहकर विश्वविद्यालय के सर्वतोमुखी स्वास्थ्य पाठयक्रमों की चर्चा की। अंत में श्री अतुल जोग ने संभागियों को राष्ट्रीय व महान कार्य को बढ़ाने हेतु अधिक समय देने की बात कही। ■

नैपुण्य शिविर

- उमा सुराना, संरक्षिका, कोलकाता-हावड़ा संभाग

तारकेश्वर स्थित हनुमान परिषद् में भोले बाबा के सान्निध्य में इस वर्ष का नैपुण्य शिविर 10 और 11 सितम्बर को आनंदपूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन के प्रथम सत्र में अखिल भारतीय श्रद्धा जागरण प्रमुख माननीय रमेशजी बाबू ने कल्याण आश्रम के श्रद्धा जागरण आयाम पर बहुत अच्छे से हमारा मार्ग दर्शन किया। कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमर्धमस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

अर्थात जब जब धर्म का ह्रास होता है अधर्म का उत्थान होता है तब मैं स्वयं प्रकट होता हूं।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

अर्थात साधुओं की रक्षा के लिए तथा दुष्टों के विनाश के लिए और धर्म की संस्थापना के लिए मैं हर युग में आता हूं। माननीय रमेश बाबू ने बताया कि कल्याण आश्रम ने संगठन करने के लिए धर्म को ही आधार माना है। वनवासी क्षेत्रों में जनजाति समाज की परम्परा व धर्म संस्कृति की रक्षा करते हुए ही हमने वनवासी के विकास का बीड़ा उठाया है। हमें सुदूर वनांचलों में अपना कार्य करना है तो श्रद्धा जागरण से ही कार्य हो सकता हैं। हम ग्रामीण क्षेत्र में जाते है तो हमें वहां के न्यूक्लीयस को पहचान कर उनकी परम्परा धर्म व संस्कृति में विश्वास दिला कर ही हम कार्य कर सकते हैं। इस प्रकार जागृत वनवासी हर तरह के संकट का सामना करने में सक्षम हो जायेंगे। बांसवोड़ा जिले में क्रॉस तोड़कर गणेश मूर्ति विराजित करके मन्दिर बनवाए गये। यह सब श्रद्धा जागरण केन्द्रों के कारण हुआ। वनवासियों में इन केन्द्रों से जागृति आई है।

कुछ साल पहले जशपुर के एक ग्राम में हमलोग गये तो वहां एक मंदिर देखा। कहने को तो मंदिर लेकिन केवल शिवलिंग विराजमान थे। चारो तरफ एक फुट की दीवार थी। छत वगैरह कुछ नहीं थी। तो उस गांव के लोगों ने कहा कि इस मंदिर को बनवा दीजिये तो हम पूरे गांव के लोग यहां पूजा, सत्संग, भक्ति करेंगे। वास्तव में गांव में कोई श्रद्धा का केन्द्र हो तो वहां के लोगों में एक सांगठिक भाव आ जाता है। उस भाव के कारण एकता, आपस में मेलजोल, एक ताकत अर्जित हो जाती है। फिर ग्राम के हर तरह के विकास के लिये वनवासी स्वयं आगे बढ़ कर कार्य करता है। फिर वे हर तरह की मुसीबत का सामना करने में सक्षम हो जायेंगे। हमें उसे स्वाभिमानी बनाकर खड़ा करना है।

अरूणाचल में बड़े प्रकल्प भले ही ना चल रहे हों लेकिन छोटी-छोटी बालबाड़ी चलाकर वहां पर बहुत बड़ा कार्य हो रहा है।

सन् 2000 से 2011 की जनगणना में हिन्दू 80 प्रतिशत से दस साल में 79 प्रतिशत हो गया है। इस प्रतिशत से यह आंकड़ा सामने आता है कि हर महीने 50,000 हिन्दू अपना धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। उसमें 5000 वनवासी जनजाति धर्मान्तरित हो रही है। हमें वनवासी समाज को धर्मान्तरित होने से बचाना है। यह कार्य हमें उनके बीच

जाकर करना है। उनकी परम्परा, धर्म संस्कृति व त्योहारों में हम भी सहभागिता करें। बार बार वनवासी ग्रामों में जायें और विश्वास दिलायें कि वे हमारे अपने है। तभी ग्रामीण संगठन खड़ा होगा जो बहुत ज्यादा आवश्यक है। हिन्दुत्व को कमजोर करने के लिए अन्य अनेक हिन्दुत्व विरोधी लोग लगे हुए हैं। ईसाइयों के और मुसलमानों के संसार में बहुत देश है। किन्तु हिन्दूओं का केवल हमारा हिन्दुस्तान है।

स्वामी विवेकानन्दजी को खेतड़ी के राजा ने पूछा कि ईश्वर का दर्शन हो सकता है क्या? स्वामीजी ने कहा कि संध्या के समय आपको एक तरफ दूर झोपड़ी से कराहती हुई आवाज आती हो और दूसरी ओर मंदिर की झालर व शंख की आवाज सुनाई दे, तो आप अगर झोंपड़ी की आवाज के पास जाकर कुछ समाधान कर सकें तो वो ही ईश्वर के दर्शन हैं। हम झालर एवं शंख की अवहेलना नही करते है। वास्तव में हमें भी ईश्वर के दर्शन करने है तो वनवासी की कुटिया में चलें, किसी गरीब की झोंपड़ी में चलें। किसी भी राष्ट्रीय कार्य में हमारी सहयोगिता हो या फिर निस्वार्थ भाव से तन-मन-धन से किसी के काम आ सकें, वह क्षण सबसे अधिक आनन्दमय होगा, वहीं हमें ईश्वर का अहसास होगा।

इस शिविर में 68 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत प्रचारक माननीय प्रशांत भट्टजी ने भी पूरे समय साथ रहकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। 9 विभिन्न सत्रों में संगठन के विविध आयामों पर गंभीर विचार विमर्श हुआ। सभी कायकर्ता नवीन उत्साह और ऊर्जा लेकर शिविर से लौटे। ■

स्वाधीनता दिवस पर गीत प्रतियोगिता का आयोजन

- सीमा रस्तोगी, मंत्री-महानगर महिला समिति

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्वाधीनता दिवस के पावन अवसर पर पूर्वांचल कल्याण आश्रम की कोलकाता -हावड़ा महानगर इकाई ने देश भक्ति पर आधारित गीत प्रतियोगिता का आयोजन कल्याण भवन में किया। 16 समितियों ने इस स्पर्धा में उत्साहपूर्वक भाग लिया। देश भक्ति से सराबोर गीतों की झड़ी सी लग गई। प्रत्येक समिति से कम से कम चार कार्यकर्ताओं का सामूहिक गान अपेक्षित था। पूरा परिवेश राष्ट्रभक्ति के भावों से आपूरित हो गया। प्रतियोगिता के निर्णायक थे श्रीमती सुनीता जैन, श्री अशोक कर्मकर एवं श्री गणेश राउत। प्रथम स्थान प्राप्त किया उत्तर हावड़ा महिला समिति ने, द्वितीय स्थान पर रही जोड़ा मन्दिर महिला समिति एवं कुम्हार टोली महिला समिति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ■

अमृत वचन

हमारे देश में वनवासी कल्याण आश्रम सबसे पहली संस्था है जो वनवासियों के लिए उनके उत्कर्ष, उनके कल्याण, उनके आर्थिक चिंतन और उनके सामाजिक सद्भाव के लिए निरंतर प्रयत्न कर रही है। हमारे जो साधु संत-महात्मा हैं, वे इसमें आर्थिक सहयोग करें। जो श्रेष्ठी हैं, व्यापारी हैं उनको भी अपनी आमदनी का, आय का एक छोटा सा भाग वनवासियों के लिए सुरक्षित करना चाहिए। मैं वनवासी कल्याण आश्रम के समस्त कार्यक्रमों का समर्थक हूँ। मुझसे जो हो सकता है, मैं भी शक्ति के अनुसार सेवा करता हूँ और सबसे सेवा करने के लिए मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। वनवासी कल्याण परिषद् विकसित हो और निरंतर समाज की सेवा करें।

- पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि

पश्चाताप

(एक सत्य घटना पर आधारित)

- राजेन्द्र कुमार मादला, क्षेत्र संगठन मंत्री

कोलकाता हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही किसी टैक्सी वाले ने पूछा - सर कहां जायेंगे?

हावड़ा, सियालदह, धर्मतल्ला...। इंग्लैंड से लौटने वाले बाबू फ्रैंक्लीन सोचने लगे...कहां जाऊँ? एक अनिश्चित दिशाहीन भविष्य फ्रैंक्लीन के मन को बार बार टोकता है। अनपेक्षित रूप से अचानक यहां पहुंचना भी एक लम्बी कहानी है... पिताजी गरीब किसान थे। बेटे प्रफुल्ल को अच्छी पढ़ाई लिखाई कराऊँगा, चाहे कितना भी खर्च करना पड़े, कितनी मेहनत करनी पड़े। सरकारी आवासीय विद्यालय में अच्छे विद्यार्थी के रूप में स्वयं को साबित करने के बाद कॉलेज की पढ़ाई की इच्छा के बावजूद निराशा आ गई थी क्योकि घर की आर्थिक स्थिति कॉलेज की पढ़ाई का खर्चा वहन करने में असमर्थ थी। गांव के शिक्षकों की सहायता से फुलवानी सरकारी कॉलेज में दाखिला हो गया। मगर कहां ठहरना, किताब कैसे खरीदना, प्रतिदिन का भोजन और आनुषांगिक खर्च कहां से लाना आदि प्रश्न प्रफुल्ल के सामने मुंह बाएं खड़े थे। आखिर प्रफुल्ल ने निर्णय लिया कि कॉलेज में पढ़ना बंद कर गांव वापस लौट जाऊँ। निराशा, अवसाद और आशंका के घेरे में रहकर पिताजी का स्वप्न चूर-चूर हो रहा था। अचानक घनघोर अंन्धेरे का सीना चीर कर एक दिन देवदूत स्वरूप चर्च के फादर पिताजी को कह रहे थे कि "प्रफुल्ल को हमारे पास भेजो, हम उसे खुद पढ़ायेंगें। लाचार गरीब बाप के पास स्वीकृति देने के सिवा दूसरा उपाय ही नहीं था।

एक नए जीवन की शुरूआत हुई। चर्च द्वारा परिचालित एक अनाथालय में ठहरने की व्यवस्था हो गई। वहां से कॉलेज डेढ कि.मी. दूर। पता नही पांच साल कैसे बीत गए। प्रफुल्ल अब फैंक्लीन था। POLITICAL SCIENCE WITH HONS. अपनी लगन, मेहनत, मधुर भाषा तथा स्वभाव के कारण अनेक जिम्मेदारियों का सफलता पूर्वक निर्वाह करने वाला ब्रदर फैंक्लीन अनेक बच्चों को बचपन से ही प्रभु ईशु की शरण में लाना, गरीबी और अशिक्षा का गलत फायदा उठाकर हजारों लोगों को उनके पूर्वजों से अलग कराना, गांव के पारम्परिक कार्यक्रमों को विज्ञान का हवाला देकर बन्द करवाना आदि में सिद्ध हस्त निपुण और कार्यकुशल फैंक्लीन को अगले महीने लंदन में होने वाले पादरियों के सम्मेलन में भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों से प्रभु ईसामसीह के प्रति सांगीतिक प्रस्तुति का निमंत्रण आया।

इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है। एक गरीब बाप के बेटे के नसीब में हवाई यात्रा। मन अति आनन्द और कृतज्ञभाव से भर उठा। फ्रैंक्लीन की लंदन के एक होटल में सवेरे चर्च के घंटे की आवाज से नींद खुली। आज रविवार, झटपट शौच से निवृत्त होकर गिरजा की ओर निकल पड़ा तो सिक्योरिटी गार्ड ने उसे रोक लिया। विस्मित फ्रैंक्लीन ने कोट के अंदर छिपे हए क्रॉस लॉकेट को बाहर निकालते हुए प्रार्थना में भाग लेने अंदर जाने की अनुमति के लिये गुहार लगाई लेकिन थोड़ा कड़क स्वभाव के गार्ड ने केवल रोका ही नहीं टोका भी। चर्च जाते हुए एक महिला ने उसे नजदीक के एक पुराने गिरजा घर में जाने के लिए उसे इशारा किया तो वह चल पड़ा। प्रार्थना सभा शुरू हो चुकी थी। यहां उसे रोकने वाला सिक्योरिटी गार्ड तैनात नहीं था। चर्च के अन्दर काफी सादगी थी। कोई सजावट नहीं, काफी दिनों से ना कोई मरम्मत और ना कोई सफाई। सहज ही

उसके मन में यह प्रश्न उभरा कि दोनो चर्च के बीच ये अंतर क्यों? वहां भव्यता और यहां पुराना टूटा-फूटा, जीर्ण-शीर्ण। वहां आलीशान व्यवस्था और इधर बिजली के तार झूल रहे है। वहां बड़े बड़े लोग और यहां मजदूरी करने वाले या स्थानीय नीग्रो जैसे जनजातीय लोगों का जमावड़ा। उसकी जिज्ञासा के जवाब में जो उत्तर मिला इससे फ्रैंक्लीन चौक उठा। उसके पैर के नीचे से जमीन खिसकती जा रही थी। पता चला कि काली चमड़ी वालों के लिए केवल प्रार्थना स्थल ही अलग नहीं वरन कबर स्थान भी अलग। घृणा का भाव यहां तक है कि एक स्कूल में भी पढ़ने के लिए गोरी चमड़ी वाले काले लोगों को प्रवेश नही देते है। रेस्टोरेन्ट, क्लब, सिनेमा, थियेटर, बार में भी अलग व्यवस्था।

भारत की वर्ण व्यवस्था की निंदा करने वाले अपने देश में क्या करते हैं? फ्रैंक्लीन जिसे स्वर्ग समझ रहा था वहां नारकीय मानसिकता के दर्शन से उसका मन बेचैन हो उठा। सभी प्राणियों में ईश्वर की सत्ता, सभी मनुष्यों को बराबर समझना केवल भारत में ही संभव है। महर्षि व्यास, बाल्मीकि की जाति का नाम किसी ने पूछा नहीं। सन्त रविदास, सन्त कबीर के दोहे सभी गाते है। बिरसा को भगवान का दर्जा दिलाने वाले भारतीय समाज में ही इंसानियत है। इसके अलावा दुनिया में कहीं भी समानता, शांति, प्रेम और नर से नरोत्तम बनने की प्रक्रिया नहीं है। किए हुए कुकर्म के लिये आज उसे पश्चाताप है। अपने मन को संभालने के लिए और पापों के प्रायाश्चित के लिए वह दौड़ पड़ा लंदन एयरपोर्ट से। स्वामी विवेकानंद की कर्मस्थली कोलकाता पहुंचकर सोच रहा है - कौन सा चेहरा लेकर फुलवाणी वापस जाऊंगा? झूठ और छल के सहारे एक मजबूत और सच्चे धर्म से जिन लोगों को अलग कर दिया उनको क्या जवाब दूंगा? गांव की सामुदायिक जमीन के ऊपर जो गिरजाघर बनवाया उसका क्या करूं? कब्रिस्तान के लिए गांव की गोचर जमीन को जबरन घेर लिया था उसका क्या होगा? वहां की जनजाति जिन पेड़ों की पूजा कर रहे थे उसे मैने ही कटवाया। उन 100 साल पुराने पेड़ों को ग्रामीणों को कैसे लौटाऊं। जिन अनाथ शिशुओं को मैंने तमिलनाडु और केरल भेजकर अंधकार की ओर धकेल दिया, उनका क्या करूं?

"सर कहां जायेंगे- होटल या किसी रिस्तेदार के यहां"- टैक्सी वाले ने फिर पूछा। चरम वेदना के क्षणों में मुख से निकल ही गया - "हावड़ा स्टेशन, मुझे सम्भलेश्वरी एक्सप्रेस पकड़नी है।"

आगे चलकर प्रफुल्ल कल्याण आश्रम के संपर्क में आया। अपने विचार को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में प्रायाश्चित किया। ■

अनुकरणीय

लेकटाउन महिला समिति द्वारा आयोजित राखी मेले में कार्यकर्ता बहनें माइक पर कल्याण आश्रम के उद्देश्य, कार्यपद्धति एवं कार्य के परिणाम स्वरुप वनांचलों में आये सुखद परिवर्तन से लगातार अवगत कराती रहीं। कल्याण आश्रम के पवित्र उद्देश्य से प्रभावित होकर सुन्दरबन के गोसाबा द्वीप में निर्माणाधीन कन्या छात्रावास हेतु श्री अशोक कुमार कुलातिया (Stall Holder) ने 5000/- रूपये का अनुदान दिया। हमारे मुख्य अतिथि श्री प्रमोद शाह ने भी 11000/- की सहयोग राशि दी। कल्याण आश्रम परिवार दोनों सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार ज्ञापित करता है।

शोक संवाद

महाश्वेता देवी का निधन

बांग्ला की जानी मानी साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्ता महाश्वेता देवी का 28 जुलाई को कोलकाता में निधन हो गया। वे 90 साल की थी। उन्हें पद्म विभूषण, रेमन मैग्सेसे, ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी आदि सम्मानों से नवाजा गया था।वे महान विभूति थी। उनकी रचनाओं में समाज के वंचित, शोषित, दलित और हाशिय पर रह रहे लोगों की करुण गाथा है। वे आदिवासी इलाकों में जाती तथा उनके सुख-दुख में शरीक होती थी। उनका जाना न सिर्फ एक योद्धा रचनाकार का अवसान बल्कि आदिवासी एवं वंचित समाज के लिए उठने वाली एक बुलंद आवाज की गूंज का समाप्त हो जाना है।

रामभाऊ कुलकर्णी पंचतत्व में विलीन

संघ के वरिष्ठ प्रचारक तथा कुछ समय कल्याण आश्रम के नासिक कार्यालय की जिम्मेवारी निभाने वाले रामभाऊ का शरीर दिनांक 19 जून को मुम्बई में पंचतत्व में विलीन हो गया। वे 82 वर्ष के थे।

उरी में आतंकी हमले में 17 जवान शहीद

जम्मू–कश्मीर के उरी में भारी हथियारों से लैस आतंकवादियों ने नियंत्रण रेखा से सटे सेना के आधार शिविर पर हमला किया जिसमें 17 जवान शहीद हो गए। शुरुआती जांच से मिले संकेत के अनुसार यह हमला जैश-ए-मोहम्मद के आतंकियों ने किया ।

दिवंगत आत्माओं को कल्याण आश्रम परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि ! ■

वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा बाढ़ राहत सेवा

किशनगंज जिला बिहार के कोचाधामन, बहादूरगंज, दीघलबैंक एवं पढिया प्रखण्डों के 795 परिवार जो महानंदा नदी के किनारे बसे थे वह बाढ से बुरी तरह से प्रभावित हो गए। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं नें उन प्रभावित क्षेत्रों में जा कर सर्वेक्षण किया। परिवारों की सूची तैयार की। इसी प्रकार पश्चिम चम्पारण के बगहा जिले में मसान नदी के कटाव के कारण औरहिया पुरा ग्राम के 105 उरांव परिवारों के घर नदी में समा गए। उन सभी को किशनगंज छात्रावास परिसर में बुलाकर राहत सामग्री 25 किलो चावल एवं तिरपाल (2ो15 फिट) का वितरण 14 अगस्त के दिन किया गया। हर परिवार के व्यक्ति को सामान अवागमन हेतु रु 100/- दिया गया। इस कार्य हेतु पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता, भंसाली ट्रस्ट, मुंबई एवं डॉ. दिलीप जयसवाल, किशनगंज का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। ■

मुख्यधारा से नहीं जुड़ सके आदिवासी परिवार

बोधकथा.....

आत्मीय अनुभूति

श्रीराम, लक्ष्मण एवम् सीता मैया चित्रकूट पर्वत की ओर जा रहे थे, राह बहुत पथरीली और कंटीली थी! श्रीराम के चरणों में कांटा चुभ गया ! श्रीराम रूष्ट या क्रोधित नहीं हुए, बल्कि हाथ जोड़कर धरती माता से अनुरोध करने लगे ! बोले- माँ, मेरी एक विनम्र प्रार्थना है आपसे, क्या आप स्वीकार करेंगी? धरती बोली- प्रभु प्रार्थना नहीं, आज्ञा दीजिए ! प्रभु बोले, माँ, मेरी बस यही विनती है कि जब भरत मेरी खोज मे इस पथ से गुजरे, तो आप नरम हो जाना ! कुछ पल के लिए अपने आँचल के ये पत्थर और कांटे छुपा लेना ! मुझे कांटा चुभा सो चुभा, पर मेरे भरत के पाँव में आघात मत करना। श्रीराम को यूँ व्यग्र देखकर धरा दंग रह गई ! पूछा- भगवन्, धृष्टता क्षमा हो ! पर क्या भरत आपसे अधिक सुकुमार है ? जब आप इतनी सहजता से सब सहन कर गए, तो क्या कुमार भरत सहन नही कर पाएंगे? फिर उनको लेकर आपके चित्त में ऐसी व्याकुलता क्यों? श्रीराम बोले- नहीं... नही माते, आप मेरे कहने का अभिप्राय नही समझीं ! भरत को यदि कांटा चुभा, तो वह उसके पाँव को नही, उसके हृदय को विदीर्ण कर देगा ! हृदय विदीर्ण !! ऐसा क्यों प्रभु? धरती माँ जिज्ञासा भरे स्वर में बोली! "अपनी पीड़ा से नहीं माँ, बल्कि यह सोचकर कि...इसी कंटीली राह से मेरे भैया राम गुजरे होंगे और ये शूल उनके पगों मे भी चुभे होंगे ! मैया, मेरा भरत कल्पना में भी मेरी पीड़ा सहन नहीं कर सकता, इसलिए उसकी उपस्थिति में आप कमल पंखुड़ियों सी कोमल बन जाना..!! अर्थात रिश्ते अंदरूनी अहसास, आत्मीय अनुभूति के दम पर ही टिकते हैं । जहाँ गहरी आत्मीयता नहीं वो रिश्ता शायद नहीं परंतु दिखावा हो सकता है । ■

कविता .....

उन्हें प्रणाम आज है

- अरुण प्रकाश अवस्थी

जो देश के लिए जिए उन्हें प्रणाम आज है,
जो देश के लिए लिए मरे उन्हें प्रणाम आज है।
जो देश राग गा रहे, जो प्रीति हैं जगा रहे,
जो शम्भु बन गरल पिएं उन्हें प्रणाम आज है!

ये देश वह्नि-राग है इसे प्रणाम तुम करो,
ये विश्व का सुहाग है, इसे प्रणाम तुम करो।
यही है विश्व भारती ऋचा-ऋचा पुकारती,
यहीं-यहीं मनुष्यता स्वरुप है सँवारती!

ये अर्चना की भूमि है ये वन्दना की भूमि है,
ये सर्जना की भूमि है ये कल्पना की भूमि है।
तुम इसे नमन करो, तुम इसे चमन करो,
राष्ट्र के तमिस्र का समग्र आचमन करो!

जिन्हें भवेश से अधिक स्वदेश इष्ट है सदा,
जिन्हें परार्थ के लिए स्वक्लेश इष्ट है सदा।
जो भारती की आरती उतारते हैं सर्वदा,
उन्हें प्रणाम कर रही है गीतिका प्रियम्वदा!

ये भूमि सिन्धु अम्बरा सुदेव निर्मितम् धरा,
यही है अन्नपूर्णा, यही-यही ऋतम्भरा।
यहीं प्रथम लिखी गई मनुष्य की किताब है,
महान भूमि का हिजाब आब बेहिसाब है!

ये देश ओंकार है, ये सृष्टि का सिंगार है,
यहाँ का एक-एक कण पवित्र बेशुमार है।
ये कर्म की युगस्थली, जुही की मंजुला कली,
विराट व्यालराट् की यही-यही है अंजली!

तुम इसे नमन करो, तुम इसे चमन करो,
राष्ट्र के तमिस्र का, समग्र आचमन करो!

अखिल भारतीय नगरीय कार्य बैठक 2016

नगरवासियों के जागरण से, वनवासी का हो उत्थान।
नगरीय कार्य बैठक करती, नगर-ग्राम सेतु निर्माण।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com